IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# बहुमुखी तथा बहुआयामी दिनकर

किरण कुमारी , हिंदी शोधार्थी शोधार्थी , नेट (हिंदी ,एजुकेशन )

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय ,आरा ,पटना।

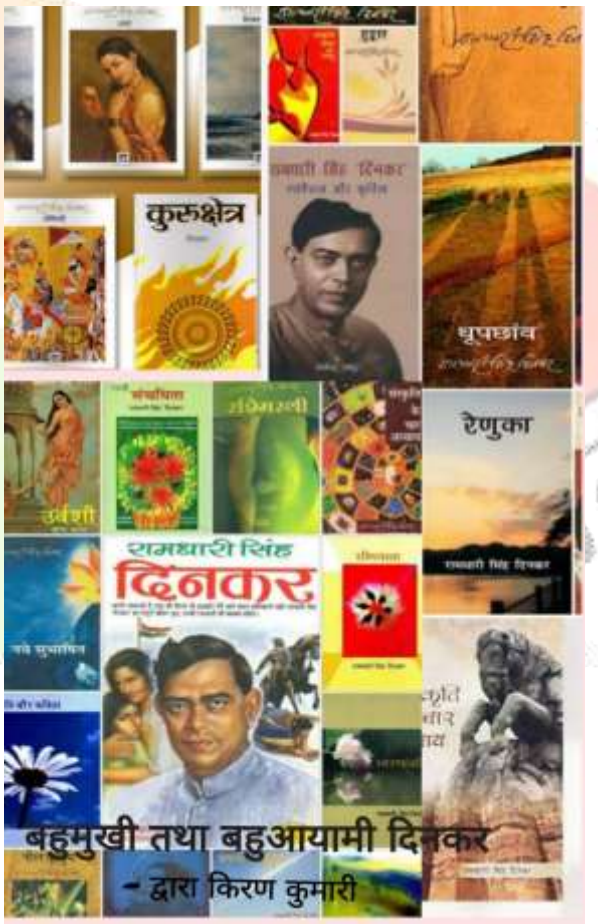

## प्रस्तावना :

बिहार के सिमरिया का एक ग्रामीण बालक अपने जीवन की समस्याओं से लड़ता हुआ एक ऐसे मुकाम पर पहुंचे जहां उन्हें समाज, देश और विश्व की समस्याएं प्रभावित करने लगी। यह दिनकर ही थे जिन्होंने लिखा:- "लोहे के पेड़ हरे होंगे , तू गान प्रेम का गाता चल, नम होगी यह मिट्टी ज़रूर , आंसू के कण बरसता चल" । बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के कारण ही इन्होंने अपने जीवन में विभिन्न पदों पर सुशोभित होकर अपना कर्तव्य पूरा किया। दिनकर जी अपने पेशा / वृति के मामले में भी बहुआयामी थे। 1932 में बीए करने के बाद उन्होंने एक स्कूल में प्रधानाध्यापक पद पर कार्य किया। 1934 में बिहार सरकार के अधीन सब रजिस्टार की नौकरी की। लोकतंत्र के अलख जगाती क्रांतिकारी कविता द्वारा हुंकार में इन्होंने लेखनी चलाई तो अंग्रेज ने उन्हें प्रथम चार वर्ष में 22 बार ट्रांसफर किया जिसके कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी। 1947 में प्रचार विभाग के उपनिदेशक और फिर मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिंदी विभाग अध्यक्ष बने। 1952 में दिनकर जी ने राज्यसभा के सदस्य के रूप में शपथ लिया और 12 वर्षों तक राज्यसभा के सदस्य रहे। उसके बाद भागलपुर विश्वविद्यालय के उप कुलपति और भारत सरकार के हिंदी सलाहकार भी बने ।

हिन्दी , उर्दू , अंग्रेजी , संस्कृत और मैथली भाषा के जानकार दिनकर की भाषा के मामले में भी बहू मुखी प्रतिभा रखते थे। आजादी के पहले बारडोली विजय पर विजय संदेश के नाम से उनकी कविता की एक पुस्तिका प्रकाशित हुई। दिनकर की रचनाओं की व्यापकता का आलम यह है कि वह गांधी से लेकर मार्क्स तक मार्क्स तक ,आर्य से लेकर अनार्य तक , हिंदू संस्कृति के आविर्भाव से लेकर प्राचीन हिंदुत्व के विद्रोह के अलावा, हिंदू संस्कृति और इस्लाम से लेकर भारतीय संस्कृति और यूरोप के संबंधों को परखते हुए अपनी लेखनी चलाई। गांधी और मार्क्स को लेकर दिनकर में एक खास द्वंद देखने को मिलता है ।

**बहुमुखी दिनकर और कविता:** वह हिंदी के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में बहुमुखी प्रतिभा दिखाते हुए गद्य और पद दोनों में अपनी लेखनी का लोहा मनवाया।इस कारण ही दिनकर को अधैर्य का कवि ,अनल का कवि , आग और राग का कवि आदि नाम से सुशोभित किया गया। दिनकर ने खुद को महज डिप्टी राष्ट्रकवि कहा। महादेवी जी ने इन्हें अग्नि संभव कवि और द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने अनल का कवि कहा ।दिनकर जी राग और आग के कवि के रूप में प्रसिद्ध थे ।

**कविता में दिनकर जी की बहुआयामी प्रतिभा** उनके कविता के **विषय वस्तु** में भी दिखती है। 1928 में रचित बारडोली विजय एक बधाई संदेश है। 1929 में रचित **उर्वशी** पौराणिक आख्यान के साथ-साथ पुनर्नवा सनातन नर का प्रतीक और उर्वशी सनातन नारी का प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह प्रेम से आध्यात्मिकता की ओर का सफर है। 1952 में प्रकाशित खंड काव्य रश्मिरथी में दिनकर जी ने कर्ण के चरित्र के मनुष्य के मूल्यांकन को वंश से नहीं बल्कि उसके आचरण और कर्म से करने को न्याय संगत बताया है। एक रूप में **रश्मिरथी** राष्ट्रवाद के साथ-साथ दलित मुक्ति चेतना का भी स्वर है।
उनकी **पांच मुक्तक** कविता बारडोली विजय (1928 ) जो अभी मौलिक रूप से उपलब्ध नहीं है दूसरा रेणुका (1935) में जो जन जागरण अतीत का गौरव गान और प्रकृति चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। रेणुका में "फैलता वन-वन आज / सुरभि से भरत अखिल दिगंत / प्रकृति आकूल यौवन के भार/ सिहर उठता रह रह संसार"
**हुंकार '** कवि के राष्ट्रीय भाव से युक्त ऐसी ओजस्वी रचना है जिसमें विप्लव और विद्रोह की आग बरसाने वाली कविताएं संकलित हैं। हूँकार (1938 ) प्रसिद्धि का आधार बनी राष्ट्रभक्ति की भावना और समकालीन व्यवस्था के प्रतिक्षोभ।'
**रसवंती** (1939) शृंगारिक मनोदशा से परिपूर्ण है। इसके बारे में स्वयं दिनकर ने कहा है कि "मुझे प्रसिद्ध हुँकार से मिली लेकिन मेरा मन रसवंती में बसता है। पांचवा द्वदं गीत जिसमें राग - द्वेष , अमीरी - गरीबी , सुख - दुख से संबंधित बातें हैं । उम्रख्याम की रूबाइयों का प्रभाव कविता में देखा जा सकता है ।
**जनतंत्र के** इस **जन्म** कविता में विद्रोही स्वर :- सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।" हाहाकार , कलम आज उनकी जय बोल ,कृष्ण की चेतावनी , 'रात यों कहने लगा मुझ से गगन का चांद ' ; 'कलम या की तलवारआदि कई अन्य राष्ट्रीय चेतना से भरे काव्य हैं।
**परशुराम की प्रतीज्ञा** में 1962 में चीन से पराजय से छुब्ध कवि ने पराजित सिपाही से ऐसा प्रश्न पूछा जो कि तत्कालीन रक्षा व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह बन जाता है।गर्दन पर किसका पाप वीर! धोते हो /शोणित से तुम किसका कलंक धोते हो। दिनकर

ने वर्तमान के साथ–साथ भारत की गौरवशाली परंपरा की रक्षा करने वाले चाणक्य और चंद्रगुप्त , विक्रमादित्य और राणा प्रताप , गुरु गोविंद सिंह और शिवाजी , बंदा वीर और लक्ष्मीबाई तथा सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह का भी आह्वान अपनी कविता में किया है । उन्होंने यह दर्शाया है कि भारत कोई साधारण देश नहीं है । भारतीय एकता , संस्कृति , आध्यात्मिकता आदि को दिनकर ने अपनी कविताओं में संजोया है ।

**हारे को हरिनाम** कविता में सबसे जरूरी काम स्वच्छ शासन , भ्रष्टाचार मुक्त तंत्र , शिक्षा और मिल बाट कर खाने के भाव को बताया है । **सामधेनी** में उन्होंने कहा है :– थक कर बैठ गए क्या भाई मंजिल दूर नहीं है । **हिमालय** कविता में आत्म बल के प्रतीक हिमालय को संबोधित करते हुए कभी इस प्राचीन पर्वत को निद्रा त्याग कर जागृत होने के लिए आह्वान किया है । **नीलकमल** कृतित्व में भारतीय जनगण के स्वप्न और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति मिली है। हर प्रकार के उत्पीड़न जैसे औपनिवेशिक, सामंती , पूंजीवादी और साम्राज्यवादी उत्पीड़न के विरुद्ध उनके संघर्ष उनकी कविता में देखने को मिलती है । **दिल्ली और मास्को** कविता में अक्टूबर क्रांति तथा नाजीवाद पर सोवियत जन गन की विजय के विश्व महत्व को भी रेखांकित किया है ।

**रश्मिरथी** (1952 ) महाभारत के योद्धा और दानवीर कर्ण की गाथा है जिसके माध्यम से दिनकर ने बताया है की जाति,वंश,पद इत्यादि योग्यता तथा शक्ति के प्रतीक नहीं है ।1946 ईस्वी में रचित कुरुक्षेत्र (सात सर्ग) में महाभारत के शांति पर्व से संबंधित , ,दर्शन , राजनीति ,अध्यात्म ,ज्ञान का विशुद्ध निरूपण किया गया है । इसमें युधिष्ठिर और श्री कृष्णा की वार्ता को स्थान दिया गया है । यह कविता सात सर्गो में लिपिबद्ध है ।

**कुरुक्षेत्र** में समानता के विषय में, विज्ञान के अधिक प्रयोगके कारण आने वालेयुद्ध के विभीषिका से लोगों को सावधान करने की चेष्टा भी की है।

1929 में रचित **प्रणभंग** में मेरा भारत का गुणगान करते दिनकर कहते हैं :– " विश्व विभव की अमर बली पर / फूलों सा खिलना तेरा / शक्ति यान पर चढ़कर वह / उन्नति –रवि से मिलना तेरा " कविता **बागी** में " निर्मम नाता तोड़ जगत का अमरपुरी की ओर चले / बंधन मुक्ति न हुई / जननि की गोद मधुरतम छोड़ चले

**'ज़ीना हो तो मरने से नहीं डरो** रे 'कविता : तुम स्वयं मृत्यु के मुख पर चरण धरो रे ! जीना हो तो मरने से नहीं डारो रे ! " दिनकर जी के कई कविता में राष्ट्रीयता को लेकर एक विद्रोही स्वर देखने को मिलता है । ' समर शेष है ' में उनके उग्र राष्ट्रवाद के स्वर मुखर हुए हैं इसके पीछे कारण गौरवशाली अतीत का भान और मान था उनकी बहुमुखी प्रतिभा बल्लभ भाई,गाँधी,टैगोर व माक्सेवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण थी।

**बाल कविताओं** में मिर्च का मजा, सूरज का ब्याह, चांद का कुर्ता आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं । प्रकृति को विषय बनाकर बसंत के नाम पर और हिमालय जैसी कविता की रचना की

**बहुआयामी दिनकर जी की गद्य कृतियां: संस्कृत के चार अध्याय** में आर्य , द्रविड़ , मुस्लिम और अंग्रेजी प्रभाव को भारतीय संस्कृति के चार अध्याय माने हैं । इसमें उन्होंने हिंदू और मुसलमान जो देखने में दो लगते हैं किंतु उनके बीच एक सांस्कृतिक एकता विद्यमान है उसको समझाने का प्रयास किया है ।

**आलोचनात्मक कृतियां** प्रकाशित की हैं :– मिट्टी की ओर (1949 ) , अर्धनारीश्वर (1952 ) , काव्य की भूमिका (1958) , पंत , प्रसाद और मैथिलीशरण (1958) , शुद्ध कविता की खोज (1966) , साहित्य मुखी (1968) , एवं आधुनिक बोध । इसके अतिरिक्त संस्कृति के चार अध्याय , बट पीपल , रेती के फूल , वेणु वन । ' दिनकर : एक पुनर्मूल्यांकन ' में आलोचक विजेंद्र नारायण सिंह ने कहा है । दिनकर की आलोचना उनकी कविताओं की प्रतिरक्षा में लिखी गई है । दिनकर की कविताओं में ज्यों ज्यों निखार आता गया , त्यो त्यो उनकी आलोचना के मूल्य भी बदलते गए । छायावाद के विषय में दिनकर ने लिखा था छायावाद हिंदी में व्यक्तिकता का पहला विस्फोट था । प्रसाद की कामायनी की कटु आलोचना । उन्होंने स्वयं की शैली विकसित करके काव्य जगत को छायावाद के सम्मोहन से मुक्त किया । उनके काव्य उत्कर्ष काल में छायावाद का संध्याकाल था ।

' वेणुवन ' **निबंध संग्रह** है जिसमें कलाकार की सफलता , शांति की समस्या , आदर्श मानव राम , अर्द्धनारीश्वर जैसे निबंध संग्रहित है। इसमें काल्पनिक सवाद भी है । यह चिंतन मनन के अभ्यारण्य की तरह है जिसका आकर्षण और प्रभाव अन्त तक बना रहता है। अर्धनारीश्वर में दिनकर नर नारी को एक द्रव्य से ढली दो प्रतिमाए मानते हुए कहते है कि जिस पुरुष में नारित्व नहीं वह अधूरा है जिस नारी मे पुरुषत्व नहीं वह भी अपूर्ण है । ' कबीर साहब से भेंट ' काल्पनिक ही नही लेकिन

दिनकर ने अपने तत्कालीन समस्याओं के मद्देनजर अदभूत और अविस्मरणीय संवाद रचा है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ' में भी जन्म भूमि की महत्ता को तो सीधे बंकिम चंद्र चटजी , तुलसीदास , ' रविन्द्रनाथ ठाकुर , इकबाल आदि के जरिए बहुत ही काव्यात्मक तरीके से प्रस्तुत करते हैं । इसी तरह मैथिली कोकिल विद्यापति, विद्यापति और ब्रजबुली , महादेवी जी की वेदना , आदर्श मानव राम , शांति की समस्या , पाठों के जरिए दिनकर साहित्य , संस्कृति , धर्म, दर्शन , स्वतंत्रता आदि के परिपेक्ष में मूल और मूल्यों से जुड़े कई सवालों से ना सिर्फ टकराते हैं बल्कि किसी न किसी निष्कर्ष पर पहुंचने की सफल कोशिश भी करते हैं । जिस तरह बुद्ध का वेणुवन उसकी तप साधना का स्थल था । यह पुस्तक ' वेनुवण ' रामधारी सिंह दिनकर के चिंतन का विरल प्रतिफल है ।
यह दिनकर की डायरी भारतीय और वैश्विक परिपेक्ष में भावनाओं , विचारों का दस्तावेज है। 'दिनकर की डायरी ' राष्ट्रीय कवि के संस्मरण और जीवन हम भारतीयो भी एक अमूल्य निधि है ।
दिनकर के कवि कर्म की परिधि जितनी बड़ी है आलोचना का फलक भी उतना ही व्यापक है । भाषा शैली में भी उनकी बहुमुखी प्रतिभा देखने को बनती है एक ओर प्रसाद गुण, यथिष्ठ प्रवाह , अनुभूति की तीव्रता , सच्ची संवेदना , चिंतन मनन की प्रवृत्ति , हिमालय की तरह धीर गंभीर और नदी की तरह बहाव है वही आलोचना के क्षेत्र में एक कटाक्ष और साक्ष्य के साथ सत्य की प्रस्तुति है । शब्दों के समुचित प्रयोग उपमाओं की विविधता , अलंकार , रंस , छंद का उचित प्रयोग , भाषाओं की चित्रात्मकता , अनायास अभिव्यक्ति , प्रभावपूर्ण शब्द योजना , अभिव्यक्ति की मौलिकता , लोकोक्तियां और मुहावरों का प्रयोग इनकी काव्यगत साहित्यिक विशेषता रही है।

**दिनकर जी की बहुआयामी व्यक्तित्व :** सौम्य,सीथे,मृदुभाषी,हृदय में अदभूत अभूतपूर्व राष्ट्रीय प्रेम,रचना में लोक प्रेम,सौंदर्य ,श्रृंगार तो दूसरी ओर मस्तिष्क में क्रांति की ज्वाला, कविता में खोजपूर्ण शैली , जोशीली प्रवृत्ति , निद्रा मगन पीढ़ी की सुप्त चेतना को जागृत करने की कला और वाणी में स्वाभाविक विद्रोह थे । उन्होंने नेहरू द्वारा राज्यसभा के लिए मनोनीत किए जाने के बावजूद उनकी नीतियों की मुखालफत करने से नहीं चुके । नेहरू के खिलाफ निम्न पंक्तियां सुनाया तो संसद में सन्नाटा छा गया :-

" घातक है जो देवता सदृश्य दिखता है, लेकिन कमरे में गलत हुकुम लिखता है |
जो पापी को गुण नहीं गोत्र प्यारा है, समझो उसने ही हमें यहां मारा है । " (दिनकर की पंक्ति)

1962 में चीन से हारने के बाद दिनकर ने लिखा :- "रे रोक युधिष्ठिर को ना यहां से जाने दे उसको स्वर्गधीर / फिरा दे हमें गांडीव गदा , लौटा दे अर्जुन भीम वीर । " का पाठ करके नेहरू का सिर झुका दिया था ।

20 जून 1962 को हिंदी के अपमान से आहत दिन करने सख्त स्वर में नेहरू से कहा :- "देश में जब भी हिंदी को लेकर कोई बात होती है तो देश के नेता गण ही नहीं कथित बुद्धिजीवी भी हिंदी वालों को अपशब्द कहे बिना आगे नहीं बढ़ते " । यह सुनकर नेहरू सहित सभी संसद रह गए और सन्नाटा सा छा गया तब मुर्दा चुप्पी तोड़ते हुए दिनकर ने कहा मैं खास कर नेहरू से कहना चाहता हूं कि "हिंदी की निंदा करना बंद किया जाए । हिंदी की निंदा से इस देश की आत्मा को गहरी चोट पहुंचती है । " हमें याद होना चाहिए कि दिनकर जी ने ही एक बार कहा था कि "राजनीति जब-जब लड़खड़ाई है साहित्य ने उसे संभाला है ।"

जून 1947 में दिनकर ने '**बापू**' नामक काव्य की रचना की । इसमें गांधी के प्रति ओज और उदात्र के कवि की संवेदना निम्न पदों से प्रकट होती है :- " बापू जो हारे , हारेगा जगती तल पर सौभाग्य क्षेम / बापू जो हारे , हारेंगे श्रद्धा , मैत्री , विश्वास , प्रेम " (राष्ट्रपिता को समर्पित दिनकर की कविता 'जो कुछ था देय दिया तुमने' से)

**विविध पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता दिनकर :** उर्वशी के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार , कुरुक्षेत्र के लिए इन्हें काशी नागरी प्रचारिणी सभा उत्तर प्रदेश सरकार और भारत सरकार से सम्मानित किया गया । विराट ग्रंथ संस्कृत के चार अध्याय के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला । डॉ राजेंद्र प्रसाद जी ने पद्म विभूषण से सम्मानित किया । जाकिर हुसैन ने डॉक्टरेट की मानव उपाधि से सम्मानित किया गुरुकुल महाविद्यालय ने विद्या वाचक पति के लिए चयन किया । राजस्थान विद्यापीठ में साहित्य चूड़ामणि से सम्मानित किया । 1999 में भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया ।
प्रिय रंजन दास मुंशी ने जन्म शताब्दी पर "रामधारी सिंह : व्यक्तित्व और " पुस्तक का विमोचन किया । हरिवंश राय बच्चन जी ने उनके योगदान साहित्यिक योगदान को देखकर कहा :- "दिनकर जी को एक नहीं बल्कि गद्य पद्य भाषा और

हिंदी सेवा के लिए अलग–अलग चार ज्ञानपीठ पुरस्कार दिए जाने चाहिए।" नामवर सिंह ने दिनकर जी के साहित्यिक और सामाजिक योगदान के लिए आग और अनल के कवि को " अपने युग का सचमुच सूर्य कहा। "

## निष्कर्ष :

एक विद्यालय के प्राचार्य से अपना जीवन शुरू करने वाले दिनकर जी सब रजिस्टार, उपनिदेशक, भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति, भारत सरकार के हिंदी सलाहकार आदि विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने अपनी प्रशासनिक योग्यता का परिचय दिया। साहित्यिक साहित्यिक क्षेत्र में उन्होंने कई काव्य और गद्य रचनाएं की।

दिनकर की कविता में राष्ट्रीयता और जनपक्षधरता का प्रधान स्वर होते हुए ना उनकी राष्ट्रीयता आज कदक्षिणापंथी जैसी मिलावटी थी और ना ही जन पक्षधर्ता वामपंथियों जैसी दिग्भ्रमित मे। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर हिंदी साहित्य में छायावादोत्तर काल के प्रमुख कवि थे जो कविता के साथ–साथ गद्य के विभिन्न विधाओं में जैसे कहानी, निबंध , संस्मरण,डायरी, आलोचना, यात्रावृतात आदि के क्षेत्र में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। इनमें से प्रमुख गद्य।त्मक रचनाएं हैं:– मिट्टी की ओर , चित्तौड़ का साका, अर्धनारीश्वर ,रेती के फूल ,हमारी सांस्कृतिक एकता , भारत की सांस्कृतिक कहानी , विराट ग्रंथ– संस्कृत के चार अध्याय ,उजली आग , देश –विदेश , राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता , काव्य की भूमिका , पंत , प्रसाद और मैथिलीशरण ( 1958), वेणुवन , धर्म नैतिकता और विज्ञान (1959 ) , वटपीपल (1961) , शुद्ध कविता की खोज , साहित्य मुखी , संस्मरण और श्रृद्धाजंलियां , भारतीय एकता , मेरी यात्राएं , दिनकर की डायरी , चेतना की शिला , विवाह की मुसीबत आधुनिक बोध इत्यादि। उनकी काव्यात्मक सौगात और अविस्मरणीय योगदान के लिए हिंदी साहित्य चिरऋणी रहेगा।

उन्होंने भारत के बहू भारतीय साहित्यकार के रचनात्मक अनुभव से अपने आप को संबंध रखा। रविंद्र नाथ टैगोर का आदर्शवाद , मानवतावाद दिनकर को बहुत प्रिय था। दिनकर जी अपनी बहु आयामी और बहुमुखी प्रतिभा के कारण न सिर्फ अपने देश में बल्कि विभिन्न देशों में भी प्रचलित प्रसिद्ध थे। सन 1961 में सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान ने एक स्नातक विद्याथी को दिनकर की रचनाओं के गंभीर अध्ययन के लिए भारत भेजा। सन 1964 में उसने अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था 'आधुनिक हिंदी काव्य के विकास में दिनकर का योगदान ' इस ग्रंथ के कुछ अध्याय पत्र– पत्रिकाओं तथा साहित्य संकलनों में भी प्रकाशित है। 1961 के सोवियत यात्रा के दौरान मास्को लेनिनवाद , यरेवन और ताशकंद के कवियों और लेखकों ने मैत्री भाव से स्वागत किया था ।

उनकी प्रतिभा पर मुक्त होकर राष्ट्र ने उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की। वे युग –चरण , राष्ट्रीय चेतना का बैतालिक और जन जागरण का अग्रदूत जैसे विशेषणों से भी विभूषित हुए। दिनकर जी हिंदी के गौरव हैं जिनको पाकर हिंदी कविता सचमुच धन्य हुई। दिनकर जी को हिंदी की अद्भुत पूर्व सेवा के लिए साहित्य पुरोधाओ में सूर्य के समान दैदीप्यमान माना गया। हजारी प्रसाद द्विवेदी उनके बारे में लिखते हैं कि "कल्पना की ऊंची उड़ान विषम परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की उमंग और सामाजिक चेतना की तीव्रता के कारण दिनकर अपने काल के भगवती चरण वर्मा और बच्चन से बिल्कुल भिन्न थे।" वह एक प्रगतिवादी और मानववादी कवि के रूप में ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को उच्च राशि और प्रखर शब्दोंसे वर्णित कर रहे थे। भूषण के बाद उन्हें वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

## संदर्भग्रंथ : -

1.उर्वशी, रामधारी सिंह , लोक भारती प्रकाशन : इलाहाबाद , संस्करण – 2015 .
2.ओंकार, कविता परिचय , रामधारी सिंह दिनकर , रश्मिरथी :संपूर्ण काव्य चुने हुए कुछ प्रेरक पंक्तियां , लोकभारती प्रकाशन , संस्करण – 2015
3.सामधेनी कविता , दिल्ली और मास्को , रामधारी सिंह दिनकर , कविता कोश .
4.कुरुक्षेत्र, रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल एंड कश्मीरी प्रकाशन; दिल्ली, संस्करण– 2004,
5.सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' कविता, रामधारी सिंह दिनकर, कविता कोश ।